संस्करण–14

भा.वा.अ.शि.प.–उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान समाचार पत्र

LiFE Lifestyle for Environment

अप्रैल 2024–जून 2024

निदेशक के डेस्क से,

मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि भा.वा.अ.शि.प. –उ.व.अ.स.,जबलपुर मध्य भारत में वनों और वानिकी क्षेत्रों के सतत् विकास के लिए अनुसंधान सहायता प्रदान करने वाले भा.वा.अ.शि.प. देहरादून के अंतर्गत नौ क्षेत्रीय संस्थानों में से एक है।

मैं भा.वा.अ.शि.प.–उ.व.अ.स. समाचार पत्र के 14वें संस्करण (अक्टूबर 2023–मार्च,2024) को साझा कर रहा हूँ जिसमें इस अवधि के दौरान किये गए महत्वपूर्ण शोध कार्य, वैज्ञानिक प्रशिक्षण और प्रकाशित शोध पत्र/पुस्तकें इत्यादि का उल्लेख है।

मैं आशा करता हूँ कि यह समाचार–पत्र वानिकी अनुसंधान से सम्बंधित शोधकर्ताओं, विभिन्न स्तर के हितधारकों और वानिकी सम्बंधित नीति निर्माताओं के लिए सहायक साबित होगा।

(डॉ.एच. एस. गिनवाल)
निदेशक,
भा.वा.अ.शि.प. –उ.व.अ.स.,जबलपुर

अंतुर्वस्तु

अंतुर्वस्तु	पृष्ठ
प्रमुख घटनाएँ	1
वैज्ञानिक कॉर्नर/परामर्शी परियोजनाएँ	2-5
प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण	6
हितधारकों के दौरे/प्रदर्शन	6-7
महत्वपूर्ण दिवस पर उत्सव	8-9
नवीन प्रकाशन	10-11
पुरस्कार	10
बमीडिया कवरेज	11
बुनियादी ढांचे एवं सुविधाएँ	12-13
उपलब्ध परीक्षण/सुविधाएं	14
समाज के लिए उपलब्ध सेवाएँ	15

प्रमुख घटनाएँ

मध्य प्रदेश कैडर के भा.व.से. अधिकारियों का दौरा (2022–2024 बैच)

मध्य प्रदेश कैडर के भा.व.से. अधिकारियों (2022–2024 बैच) ने 30 मई, 2024 को भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का दौरा किया। उ.व.अ.स. के निदेशक डॉ. एच.एस. गिनवाल ने अधिकारियों से बातचीत की और उन्हें संस्थान में चल रही विभिन्न अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों से अवगत कराया। उन्होंने अधिकारियों को क्षेत्र में अनुसंधान और विकास हेतु संस्थान के साथ समय–समय पर संपर्क बनाए रखने की सलाह दी। समूह ने टीक स्केलेटनाइजर को नियंत्रित करने के लिए उ.व.अ.स. ट्राइकोकार्ड के विकास और अनुप्रयोग का अवलोकन करने के लिए उ.व.अ.स. कीटशाला का भी दौरा किया।

भा.व.से. प्रोबेशनर्स बैच 2022–2024 ने 24 मई, 2024 को भा.वा.अ.शि.प.–कौशल विकास केंद्र, छिंदवाड़ा का दौरा किया

"मृदा पोषक तत्व प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्डों का उपयोग" विषय पर प्रशिक्षण कार्यशाला

भा.वा.अ.शि.प.–उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान
समाचार पत्र

अप्रैल 2024–जून 2024

भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर ने 28 मई, 2024 को भा.वा.अ.शि.प.–कौशल विकास केंद्र, छिंदवाड़ा में "मृदा पोषक तत्व प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्डों का उपयोग" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया। इस अवसर पर, भा.वा.अ.शि.प. की महानिदेशक और मुख्य अतिथि श्रीमती कंचन देवी, भा.व.से. ने मध्य प्रदेश की वन मृदाओं के पोषक तत्वों के सफल आंकलन में संस्थान के प्रयासों की सराहना की और भूमि क्षरण की समस्या और ग्लोबल वार्मिंग पर इसके प्रभाव को दूर करने के लिए परियोजना के राष्ट्रीय महत्व पर जोर दिया।

भा.वा.अ.शि.प.– उ.व.अ.स., के निदेशक डॉ. एच.एस. गिनवाल ने मध्य प्रदेश के वनों की उत्पादकता बढाने के लिए संस्थान द्वारा तैयार किए गए वन मृदा स्वास्थ्य कार्डों के उपयोग पर प्रकाश डाला। श्री मधु वी. राज, वन संरक्षक, भा.व.से., छिंदवाड़ा ने राज्य के हरित आवरण को बढ़ाने एवं गुणवत्तापूर्ण वृक्षारोपण के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्डों के उपयोग के महत्व पर जोर दिया।

कार्यशाला में मध्य प्रदेश राज्य वन विभाग के चार सर्किलों यानी बैतूल, सिवनी, होशंगाबाद और छिंदवाड़ा के 70 रेंजर अधिकारी और डिप्टी रेंज अधिकारी शामिल हुए। कार्यशाला में पूर्वी छिंदवाड़ा के डी.एफ.ओ. श्री विजेंद्र श्रीवास्तव और पश्चिमी छिंदवाड़ा के डी.एफ.ओ. ईश्वर जयरांडे की मौजूदगी रही।

वैज्ञानिक कॉर्नर/परामर्श परियोजनाएँ

चंबल के बीहड़ में भूमि क्षरण और मरुस्थलीकरण प्रबंधन हेतु विकसित पुनर्स्थापना मॉडल

बीहड़ भूमि को अक्सर खराब भूमि कहा जाता है जो कटाव के कारण बने नालों के नेटवर्क के परिणामस्वरूप बनती है। भारत में, ये बीहड़ क्षेत्र कुछ प्रमुख नदी प्रणालियों के साथ–साथ विशेष रूप से उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान जैसे राज्यों में पाए जाते हैं। इन क्षेत्रों को यमुना–चंबल बीहड़ क्षेत्र, तापी–नर्मदा–साबरमती बीहड़ क्षेत्र, छोटानागपुर बीहड़ क्षेत्र और शिवालिक तलहटी बीहड़ क्षेत्र भी कहा जाता है। ये बीहड़ प्रणालियाँ पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील हैं जो बाढ़ और सूखे के प्रबंधन, जलीय और तटीय जैव विविधता और ग्रामीण आजीविका सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं। भारत के शुष्क भूमि और रेगिस्तान में वनस्पति आवरण और लोगों की आजीविका को बढ़ाकर मरुस्थलीकरण का मुकाबला करने हेतु अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के एक भाग के रूप में, भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने एक पुनर्स्थापना मॉडल विकसित करने और इन बीहड़ क्षेत्रों में भूमि क्षरण को नियंत्रित करने के लिए देशी वृक्ष प्रजातियों के रोपण और मृदा–नमी संरक्षण जैसे भूमि सुधार उपायों के संयोजन का उपयोग करके क्षीण बीहड़ क्षेत्रों को पुनर्स्थापित करने के लिए वृक्षारोपण की पहल की है। ये प्रयास मध्य प्रदेश के मुरैना जिले में लगभग 22 हेक्टेयर बीहड़ भूमि पर किए गए, जो तकनीकी रूप से सबसे बड़े बीहड़ क्षेत्र यानी यमुना–चंबल का हिस्सा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत मुरैना जिले की अंबाह तहसील में स्थलों का चयन किया गया है और मुरैना के चंबल के बीहड़ों में सात वृक्ष प्रजातियों के वृक्षारोपण के लिए राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय (आर.वी.एस.के.वी.वी.), ग्वालियर द्वारा भूमि प्रदान की गई है। वर्ष 2022 के मानसून के बाद 22.68 हेक्टेयर भूमि पर 7 वृक्ष प्रजातियों अकैशिया केटैचू (खैर), अकैशिया टॉर्टिलिस (टोर्टिलिस), अजेडिरेक्टा इंडिका (नीम), एनोगेइसस पेंडुला (करधई), कॉमिफोरा वाइटी (गुग्गल), एग्ले मार्मेलोस (बेल) और एम्ब्लिका ऑफिसिनेलिस (आंवला) का रोपण किया गया है।

वृक्षारोपण और उपचार

मृदा सुधार के लिए उपचारों का एक संयोजन लागू किया गया है। मृदा सुधार के रूप में तीन प्रकार के जैव–उर्वरक जिनमें राइजोबियम, एजोटोबैक्टर और एजोस्पिरिलम शामिल हैं, इसकी 3 वर्गीकृत खुराकों (5, 10 और 15 प्रतिशत) में और तीन मल्च यानी गेहूं की भूसी, पत्थर के कंकड़ और पत्ती के कूड़े का उपयोग मिट्टी की नमी को संरक्षित करने और मिट्टी की पोषक स्थिति को बढ़ाने के लिए किया जा रहा है।

चेक डैम का निर्माण

एस.एफ.डी. अधिकारियों के परामर्श से वृक्षारोपण स्थल के अन्दर तथा जहाँ नाले का कटाव अधिक था, वहाँ नौ चेक डैम का निर्माण किया गया। चेक डैम के निर्माण के पश्चात वृक्षारोपण स्थल में जल द्वारा कटाव काफी कम हो गया है। बबूल के पौधे सघन रूप से उग आए हैं, जिससे मिट्टी की नमी में सुधार हुआ है तथा वायु द्वारा कटाव कम हुआ है। चेक डैम के निर्माण से अक्टूबर–नवम्बर तक वृक्षारोपण स्थलों में मिट्टी की नमी बनाए रखने में सहायता मिली है, जो अन्यथा केवल वर्षा ऋतु के दौरान ही बनी रहती थी।

LiFE Lifestyle for Environment

भा.वा.अ.शि.प.–उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

समाचार पत्र

अप्रैल 2024–जून 2024

सीनीय समुदायों का एकत्रीकरण

खेतों के समूहों के चारों ओर लाइव फेंसिंग लगाने के लिए स्थानीय लोगों, विशेष रूप से आस–पास के गाँवों (नयापुरा उसेथ, भीलपुर, ईसा हवेली) के किसानों के साथ बातचीत तथा जागरूकता पैदा की गई।

वैश्विक तथा राष्ट्रीय प्रासंगिकता

देशी वृक्ष प्रजातियों वृक्षारोपण ,गंभीर मिट्टी कटाव तथा नाले के निर्माण आदि को रोकने के लिए चेक–डैम के निर्माण जैसे भूमि सुधार उपायों के फलस्वरूप वनस्पति पुनरुद्धार, मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार तथा कार्बन भंडारण प्रदान करने के मामले में 85 प्रतिशत तक सफल साबित हुए हैं। भूमि क्षरण तटस्थता (एल.डी.एन.) के लिए आह्वान करने वाली वैश्विक पहलों की पृष्ठभूमि में, मरुस्थलीकरण से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीसीडी) के लिए भारत की 2030 की प्रतिबद्धताएं भूमि क्षरण से निपटने, टिकाऊ भूमि प्रबंधन को बढ़ावा देने और भूमि क्षरण तटस्थता प्राप्त करने के लिए इसके व्यापक लक्ष्यों के अनुरूप हैं। यह अध्ययन पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने, मरुस्थलीकरण और भूमि क्षरण से निपटने के वैश्विक प्रयासों में योगदान देने के लिए भारत की व्यापक रणनीति के अनुरूप है

जुलाई 2022 में वृक्षारोपण के प्रारंभिक चरण अगस्त 2023 के दौरान

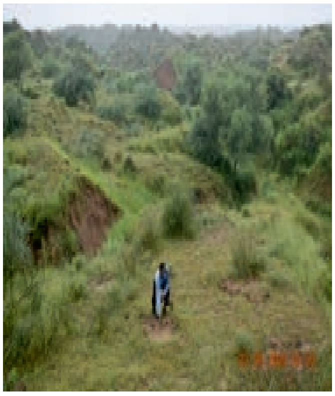

एसाह में वृक्षारोपण स्थल

किसानों के खेतों की सीमाओं में लाइव–फेंसिंग बढ़ाने के लिए कैरिसा कैरंडास (करौंदा) के पौधों का वितरण।

श्री एम. राजकुमार
वैज्ञानिक–डी

छत्तीसगढ़ के वन प्रभागों के मृदा स्वास्थ्य कार्ड (एस.एच. सी.) के लिए पूर्व–रिलीज परामर्श बैठक

भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (टी.एफ.आर. आई.), जबलपुर ने 23 अप्रैल, 2024 को अरण्य भवन, रायपुर में 'छत्तीसगढ़ के वन प्रभागों के मृदा स्वास्थ्य कार्ड (एस.एच.सी.) के लिए पूर्व–रिलीज परामर्श बैठक' का आयोजन किया। अखिल भारतीय समन्वय अनुसंधान परियोजना – 22 के राष्ट्रीय परियोजना समन्वयक डॉ. विजेंद्र पवार ने परियोजना का अवलोकन प्रस्तुत किया। भा.वा.अ.शि.प.–उ.व.अ.स. जबलपुर के प्रमुख और वैज्ञानिक–एफ डॉ. अविनाश जैन ने छत्तीसगढ़ के लिए वन एस.एच. सी. की तैयारी पर जानकारी साझा की। छत्तीसगढ़ राज्य वन विभाग (सी.जी.एस.एफ.डी.) के पी.सी.सी.एफ. और एच.ओ.एफ.एफ. और कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री श्रीनिवास राव ने उ.व.अ.स. के प्रयासों की सराहना की और सुधारात्मक सुझाव भी दिए। इस कार्यक्रम में 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें वरिष्ठ अधिकारी, सी.जी.एस.एफ.डी. के सभी 34 प्रादेशिक वन प्रभागों के प्रभागीय वन अधिकारी (डी.एफ. ओ.), उ.व.अ.स. के वैज्ञानिकों की एक टीम और सभी भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों के प्रधान अन्वेषक (पी.आई.) शामिल रहे।

डॉ. जंगम दीपिका
वैज्ञानिक–सी

कॉर्डिया मैकलियोडी (दहिमन): एक लुप्तप्राय वृक्ष प्रजाति

दहिमन (कॉर्डिया मैकलियोडी) भारत का एक महत्वपूर्ण स्थानिक, जातीय–औषधीय वृक्ष है। विशेष रूप से, यह भारत के कुछ क्षेत्रों में पाया जाता है, जिसमें छत्तीसगढ़ मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ हिस्से शामिल हैं। इस पौधे में, प्रजनन जीव विज्ञान के अध्ययन के अंतर्गत पोलीगामॉस फूल (पेंटामर और हेक्सामर) पाया जाता है। पुष्प सत्र 2024 में, मध्य प्रदेश (टिकरिया, सागर) और छत्तीसगढ़ (कोरिया) में चिह्नित पेड़ों में बड़े पैमाने पर फूल देखे गए। शोध से यह बताया गया है कि टिकरिया के चिह्नित पेड़ों में फल, पुष्पन के उपरांत नहीं था , जबकि सागर और कोरिया के चिह्नित पेड़ों में क्रमशः 12.16 प्रतिशत और 10.01 प्रतिशत फल देने की क्षमता थी। एपिगियल बीज का अंकुरण 20 प्रतिशत तक दर्ज किया गया था, लेकिन सल्फ्यूरिक एसिड और जिब्रेलिक एसिड

भा.वा.अ.शि.प.–उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान
समाचार पत्र
अप्रैल 2024–जून 2024

की कम खुराक के उपयोग से अंकुरण 60 प्रतिशत तक बढ़ा हुआ पाया गया । रोगजनकों का गंभीर प्रकोप , जो अंकुर अवस्था में कॉलर रॉट और जड़ खराब होने का कारण बनता है, इसकी उत्तरजीविता के लिए प्रमुख चिंता का विषय है। अलग–थलग आबादी, वनों की कटाई, अत्यधिक दोहन, विखंडन और अन्य मानवीय हस्तक्षेपों के कारण दहिमन की आनुवंशिक विविधता कम हो गई है और अन्य खतरों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ गई है। अतः दहिमन के संरक्षण के लिए निरंतर वैज्ञानिक प्रयासों की आवश्यकता है।

डॉ. कौशल त्रिपाठी
वैज्ञानिक–सी

फ्लेकोर्टिया इंडिका (ककई) की गैर–संवहनीय कटाई: संरक्षण रणनीति प्रारंभ करने की आवश्यकता

फ्लैकोर्टिया इंडिका की गैर–संवहनीय कटाई, इसकी जीवित रहने की क्षमता और पारिस्थितिक भूमिका के लिए एक बड़ा खतरा है। अत्यधिक दोहन के कारण जनसंख्या में गिरावट, आवास में गिरावट, आनुवंशिक क्षरण और पारिस्थितिक असंतुलन देखा गया है, साथ ही प्रजातियों से जुड़े पारंपरिक ज्ञानार्जन को भी खतरा है। मध्य भारत में क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान, खेतों में विनाशकारी कटाई देखी गई।

इन मुद्दों से निपटने के लिए, कटाई प्रथाओं को विनियमित करने, स्थानीय समुदायों को शामिल करने, आवासों की रक्षा और पुनर्स्थापना, बाहरी संरक्षण उपायों को लागू करने, अनुसंधान और निगरानी करने और जन जागरूकता बढ़ाने जैसी संरक्षण रणनीतियाँ आवश्यक हैं। भा.वा.अ.शि.प.–उ.व.अ.स. जबलपुर ने 23 अप्रैल, 2024 को मध्य प्रदेश के जबलपुर के पिपरिया गाँव में वन आश्रित समुदायों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, ताकि आदिवासी समुदायों को प्रशिक्षण और प्रदर्शन के माध्यम से जागरूक किया जा सके, खेती के माध्यम से इन जंगली फलों की प्रजातियों के सतत् उपयोग और संरक्षण को बढ़ावा दिया जा सके। ये कार्य एफ. इंडिका के दीर्घकालिक संरक्षण और इससे मिलने वाले बहुमूल्य लाभों को सुनिश्चित करने में मदद करेंगे।

टेरोस्पर्मम एसरीफोलियम (कनकचम्पा), लेजरस्ट्रोमिया पार्विफ्लोरा (लेंडिया) और श्लेचेरा ओलेओसा (कुसुम) : निष्क्रियता से विकास तक

इस प्रजाति में विशेष निष्क्रियता पायी जाती है, अतः बीज की निष्क्रियता को तोड़ने और अंकुरण को बढ़ावा देने के लिए पकने की आवश्यकता होती है। उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में पाए जाने वाले टेरोस्पर्मम एसरीफोलियम, लेजरस्ट्रोमिया पार्विफ्लोरा और श्लेचेरा ओलेओसा पर प्रयोग किए गए हैं। यह देखा गया कि दो से छह महीने तक शुष्क भंडारण प्रभावी रूप से अंकुरण को बढ़ावा देता है, जिससे उनकी निष्क्रियता से सक्रिय विकास तक संक्रमण को सुगम बनाया जा सकता है। इन अंतर्दृष्टियों को लागू करके, वानिकी पेशेवर, संरक्षणवादी और नर्सरी प्रबंधक बीज अंकुरण दरों में सुधार कर सकते हैं और पुनर्वनीकरण और संरक्षण कार्यक्रमों में इन मूल्यवान प्रजातियों की सफल स्थापना सुनिश्चित कर सकते हैं।

पी. एसीरीफोलियम, एल. पार्विफ्लोरा, एस. ओलियोसा के बीज

श्री मनीष कुमार विजय
वैज्ञानिक–सी

LiFE Lifestyle for Environment

भा.वा.अ.शि.प.–उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

समाचार पत्र

अप्रैल 2024–जून 2024

अंतर्राष्ट्रीय वन अनुसंधान संगठन संघ विश्व कांग्रेस में भागीदारी: 2050 की ओर वन और समाज–

भा.वा.अ.शि.प. –उ.व.अ.स., जबलपुर के वैज्ञानिक–सी ,श्री राठौड़ दिग्विजयसिंह उम्मेदसिंह ने 23 से 29 जून, 2024 के दौरान स्वीडन के स्टॉकहोम में आयोजित 26वें अंतर्राष्ट्रीय वन अनुसंधान संगठन संघ विश्व कांग्रेस में भाग लिया। उन्होंने "पर्वतीय पाइनस रॉक्सबर्गी वनों में मृदा अपरदन पर कम लागत वाले इन–सीटू मृदा नमी संरक्षण उपायों के प्रभाव" पर पोस्टर प्रस्तुत किया। उन्होंने कांग्रेस के दौरान मेंटरशिप कार्यक्रम में भी योगदान दिया और दो अंतरराष्ट्रीय छात्रों (नामीबिया विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (एन.यू.एस.टी.) से लीना नफ्ताल और लिमरिक विश्वविद्यालय से ब्लेयर रफिंग) का मार्गदर्शन किया और 19–22 जून, 2024 तक एस.एल.यू.. उप्साला, स्वीडन में अंतर्राष्ट्रीय वन अनुसंधान संगठन संघ द्वारा आयोजित 'वन विज्ञान में अनुसंधान विधियों' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा किया। अंतर्राष्ट्रीय वन अनुसंधान संगठन संघ विश्व कांग्रेस के 'वन और समाज 2050 की ओर' पर विचार–विमर्श, दुनिया भर में वन पारिस्थितिकी प्रणालियों और मानव कल्याण के अस्तित्व को सुनिश्चित करने और सभी के लिए एक स्थायी भविष्य के लिए आवश्यक परिवर्तनों का मार्गदर्शन करने के लिए केंद्रीय माना जाता है। आयोजन में 102 देशों के 4,300 विशेषज्ञों द्वारा लगभग 3,500 भाषण दिए गए ।

अंतर्राष्ट्रीय वन अनुसंधान संगठन संघ विश्व कांग्रेस

अंतर्राष्ट्रीय वन अनुसंधान संगठन संघ विश्व कांग्रेस में पोस्टर प्रस्तुति

आई.यू.एफ.आर.ओ.–एस.पी.डी.सी. नेटवर्किंग बिंगो के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित

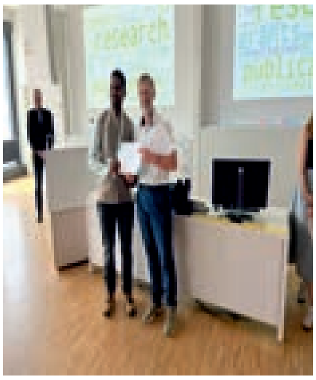

भा.वा.अ.शि.प. – उ.व.अ.स. के वैज्ञानिक को "वन विज्ञान में अनुसंधान पद्धतियां" पर

स्टॉकहोम में शहरी वन पार्क का क्षेत्रीय दौरा

नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में क्षीण बांस वनों का मूल्यांकन: छत्तीसगढ़ में कैम्पा निगरानी एवं मूल्यांकन

भा.वा.अ.शि.प. – उ.व.अ.स., जबलपुर से डॉ. हरिओम सक्सेना, वैज्ञानिक–ई, श्री प्रमोद सिंह राजपूत, एस.टी.ओ. और श्री मनोज कुमार जोशी, एस.टी.ओ. की एक टीम ने छत्तीसगढ़ राज्य के सुकमा वन प्रभाग के अंतर्गत गोलापल्ली, किस्टाराम और कोंटा पर्वतमाला के गंभीर रूप से नक्सल प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया और कैम्पा कार्यों की निगरानी एवं मूल्यांकन के तहत राज्य में क्षीण बांस वनों के पुनर्वासित स्थलों का मूल्यांकन किया।

डॉ. हरिओम सक्सेना
वैज्ञानिक –ई

स्वीकृत नवीन परियोजनाएं :–

गायत्री भूमिगत कोयला खनन विस्तार परियोजना के लिए साइट–विशिष्ट वन्यजीव संरक्षण और प्रबंधन योजना की तैयारी पर परामर्श 29.05.2024 को प्रदान किया गया। बजट परिव्यय – 52 लाख रुपये, प्रायोजक प्राधिकरण –एस.ई.सी.एल.

पेटेंट

डॉ. हरिओम सक्सेना, डॉ. रेणुका थेरेगांवकर और डॉ. वी. के. वार्ष्ने ने परियोजना ए.आई.सी.आर.पी.–16 के तहत 'बालों पर लगाने के लिए एक प्राकृतिक डाई के काढ़े से युक्त एक तरल हर्बल हेयर डाई फॉर्मूलेशन रंग रचना' (आवेदन संख्या 202421008482 दिनांक 08/02/2024) नामक नवाचार पर एक पेटेंट दाखिल किया।

समझौता ज्ञापन

भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने 14 मई, 2024 को सरकारी एम.एच. कॉलेज ऑफ होम साइंस एंड साइंस फॉर विमेन (स्वायत्त) जबलपुर (म.प्र.), भारत के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, दोनों संस्थानों के बीच सामान्य हित और संबद्ध गतिविधियों के लिए, बुनियादी और उन्नत अनुसंधान, क्षमता निर्माण और प्राकृतिक संसाधनों और उनके सतत् विकास के विभिन्न पहलुओं पर ज्ञान साझा करने के लिए सहयोग करने का निर्णय लिया ।

भा.वा.अ.शि.प.–उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान
समाचार पत्र

अप्रैल 2024–जून 2024

तकनीकी और सलाहकार सेवाएं

- डॉ. मोहन सी., और डॉ. निधीश टी.डी., और उनकी टीम ने 5–6 जून, 2024 को वन रेंज अधिकारी (एफ.आर.ओ.), गोटेगांव रेंज, नरसिंहपुर वन प्रभाग, मध्य प्रदेश को तकनीकी और सलाहकार सेवाएं प्रदान कीं। यह बागानों में सागौन और मेलिना(खमार) के युवा पौधों के बीच मृत्यु के कारणों का निरीक्षण और पहचान करने के लिए एफ.आर.ओ. के अनुरोध के जवाब में था।

- डॉ. मोहन सी., और डॉ. निधीश टी.डी., और उनकी टीम ने 07 जून, 2024 को मोहगांव परियोजना प्रभाग (एम.पी.आर.वी.वी.एन.एल.), कंचनगांव सागौन नर्सरी, मंडला जिले के डी.एम. और एस.डी.ओ. को प्री–मानसून वर्षा की शुरुआत से पहले नर्सरी क्षेत्र से सफेद ग्रब के खतरे को कम करने के लिए नर्सरी रखरखाव के संबंध में तकनीकी सलाहकार सेवाएं प्रदान कीं। यह मध्य प्रदेश राज्य वन विकास निगम लिमिटेड (एम.पी.वी.वी.आर.एन.एल.), मोहगांव परियोजना प्रभाग, मंडला, मध्य प्रदेश के अधिकार क्षेत्र में आने वाली नर्सरी का निरीक्षण करने और फ्रंटलाइन नर्सरी पेशेवरों और वन अधिकारियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने के एफ.आर.ओ. अनुरोध के जवाब में था।

- डॉ. मोहन सी., और डॉ. निधीश टी.डी., ने 12 जून, 2024 को मोहगांव परियोजना प्रभाग (एम.पी.आर.वी.वी.एन.एल.), कंचनगांव सागौन नर्सरी, मंडला जिला, मध्य प्रदेश के मंडल प्रबंधक को तकनीकी और सलाहकार सेवाएं प्रदान कीं। इसके बाद नर्सरी बेड में सागौन के पौधों की मृत्यु के कारणों का निरीक्षण करने और उपचारात्मक उपाय सुझाए गए।

- डॉ. मोहन सी., और उनकी टीम ने 21 जून, 2024 को मध्य प्रदेश के सीधी वन प्रभाग के जियावन वन नर्सरी में सागौन की नर्सरी बेड में सफेद ग्रब की घटना पर एक फील्ड निरीक्षण में भाग लिया। उन्होंने कीट–मुक्त सागौन के पौधों के उत्पादन के बारे में वन अधिकारियों और नर्सरी कर्मचारियों को वैज्ञानिक सलाह दी।

प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण

आवश्यक कार्यों में सीधे तौर पर शामिल (फ्रंटलाइन स्टाफ) को सशक्त बनाना: मध्य भारतीय आर ई टी प्रजातियों के संरक्षण के लिए बीज और नर्सरी प्रौद्योगिकियों को आगे बढ़ाना

भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान(टी.एफ.आर.आई.), जबलपुर ने 17 मई, 2024 को "मध्य भारत के विभिन्न प्रकार के वनों से चयनित वानिकी प्रजातियों के बीज और नर्सरी प्रौद्योगिकी" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया। इस प्रशिक्षण में मध्य प्रदेश राज्य वन विभाग के लगभग 30 कर्मचारियों ने भाग लिया। संस्थान के निदेशक डॉ. एच.एस. गिनवाल ने वन वृक्षारोपण की गुणवत्ता और विविधता को बढ़ाने के लिए बीज प्रमाणीकरण, नर्सरी मान्यता और गुणवत्ता वाले बीजों के उपयोग के राष्ट्रीय महत्व पर प्रकाश डाला। वनसंवर्द्धन, वन प्रबंधन और कृषि वानिकी प्रभाग के वैज्ञानिक और प्रशिक्षण समन्वयक श्री मनीष कुमार विजय ने 14 दुर्लभ, लुप्तप्राय और महत्वपूर्ण प्रजातियों के बारे में जानकारी प्रस्तुत की।

भा.वा.अ.शि.प. – उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने एम.पी.आर.वी.वी.एन.एल. के सहयोग से मोहगांव परियोजना, पश्चिम मंडला प्रभाग में ''वन नर्सरी में कीटों की पहचान और उनके प्रबंधन'' पर एक व्यावहारिक प्रशिक्षण का आयोजन किया। प्रशिक्षण में प्रभागीय प्रबंधक, श्रीमती प्रतिभा शुक्ला आई.एफ.एस., एम.पी.आर.वी.वी.एन.एल., मंडला, नर्सरी विशेषज्ञों और राज्य वन विभाग के अधिकारियों सहित 38 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

भा.वा.अ.शि.प.–कौशल विकास केंद्र, छिंदवाड़ा ने 20 जून, 2024 को सभी कार्यालय कर्मचारियों के लिए "आपदा प्रबंधन" पर प्रशिक्षण आयोजित किया।

हितधारकों के भ्रमण/प्रदर्शन

केन्द्रीय विद्यालय (उ.व.अ.स.) शाखा के कक्षा 6वीं से 8वीं के 120 विद्यार्थियों के एक समूह ने 5 अप्रैल, 2024 को भा.वा.अ.शि.प.–उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर के संग्रहालय सह व्याख्या केन्द्र का भ्रमण किया।

भा.वा.अ.शि.प.–उष्णकटिबंधीय
वन अनुसंधान संस्थान
समाचार पत्र

अप्रैल 2024–जून 2024

श्रीमती मनीषा, नोडल अधिकारी, वन विज्ञान केन्द्र, चन्द्रपुर, तथा अतिरिक्त निदेशक, श्रीमती विद्या, प्रभागीय वन अधिकारी, चन्द्रपुर वन अकादमी, महाराष्ट्र (भा.वा.अ.शि.प.) ने 9 से 10 मई, 2024 के दौरान उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का भ्रमण किया, जिसका उद्देश्य वन विज्ञान केन्द्र, चन्द्रपुर के अन्तर्गत संस्थान द्वारा विकसित वानिकी की उन्नत तकनीकों/विधियों से परिचित कराना तथा उन्हें अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना था।

34 वन रक्षक प्रशिक्षुओं के एक समूह ने शैक्षिक भ्रमण के एक भाग के रूप में 26 मई, 2024 को भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का भ्रमण किया। उन्होंने संस्थान के वन पारिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग, आनुवंशिकी एवं वृक्ष सुधार प्रभाग, कीट प्रबंधन प्रयोगशाला और संग्रहालय सह व्याख्या केंद्र का दौरा किया तथा संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी प्राप्त की।

महत्वपूर्ण दिवसों का उत्सव–

विश्व पृथ्वी दिवस

भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने 22 अप्रैल, 2024 को 'ग्रह बनाम प्लास्टिक' थीम के साथ विश्व पृथ्वी दिवस, 2024 मनाया। इस कार्यक्रम में परिसर से प्लास्टिक को हटाना, पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों को बढ़ावा देना, पृथ्वी संरक्षण पर वृत्तचित्र की स्क्रीनिंग और निर्दिष्ट वन क्षेत्रों के बाहर वन विकास में शामिल किसानों को मान्यता देने सहित विभिन्न गतिविधियाँ शामिल थीं। कार्यक्रम में 100 छात्रों के एक समूह, जन अभियान परिषद के सदस्यों, राज्य वन विभाग के अधिकारियों, लखनादौन ब्लॉक, सिवनी, और मध्य प्रदेश के नवनियुक्त आर.एफ.ओ. ने भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस

भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (टी.एफ.आर.आई.), जबलपुर ने 'योजना का हिस्सा बनें' थीम के तहत अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस मनाया। डॉ. रंजना नेगी, वैज्ञानिक और प्रमुख, वन वनस्पति प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प.–व.अ.सं. देहरादून ने जैव विविधता पर एक व्याख्यान दिया। जैव विविधता पर एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के बाद भारत के पश्चिमी घाट की नदी 'अघनाशिनी' पर वृत्तचित्र का प्रदर्शन भी किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान के सभी वैज्ञानिक, अधिकारी और कर्मचारी शामिल हुए।

भा.वा.अ.शि.प.–उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान
समाचार पत्र
अप्रैल 2024–जून 2024

भा.वा.अ.शि.प.–कौशल विकास केंद्र, छिंदवाडा ने 22 मई, 2024 को अंतर्राष्ट्रीय जैविक विविधता दिवस मनाया।

विश्व पर्यावरण दिवस

विश्व पर्यावरण दिवस, 2024 के लिए कार्यक्रमों की श्रृंखला 27 मई, 2024 को भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर में शुरू हुई जिसमें लगभग 35 शोधार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और 'विशिष्ट वर्गीकरण विशेषताओं' का उपयोग करके क्षेत्र में लगभग 100 पौधों की प्रजातियों की पहचान करने में सफलता अर्जित की।

विश्व पर्यावरण दिवस 2024 के लिए कार्यक्रमों की अगली कड़ी में, डॉ. एच.एस. गिनवाल, निदेशक, भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर ने उ.व.अ.स. बॉटनिकल गार्डन में एक जल संचयन संरचना का उद्घाटन किया, जो कार्यक्रम की थीम 'भूमि बहाली, मरुस्थलीकरण और सूखे से निपटने की क्षमता' के अनुरूप है।

विश्व पर्यावरण दिवस 2024 का समापन भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (उ.व.अ.स.), जबलपुर में 10 कार्यक्रमों की श्रृंखला के साथ हुआ। इनमें संस्थान के परिसर और आवासीय क्षेत्रों के आसपास सफाई अभियान, वृक्षारोपण गतिविधि और केंद्रीय विद्यालय में छात्रों के लिए एक चित्रकला प्रतियोगिता शामिल थी। इसके अतिरिक्त, शोधार्थियों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और क्षरित भूमि बहाली पर केंद्रित वृत्तचित्रों की स्क्रीनिंग भी की गई।

भूमि क्षरण के मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और एकल–उपयोग प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के उद्देश्य से प्रदूषण जागरूकता सह स्वच्छता रैली भी आयोजित की गई। रैली में स्थानीय निवासियों और संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों की महत्वपूर्ण भागीदारी रही।

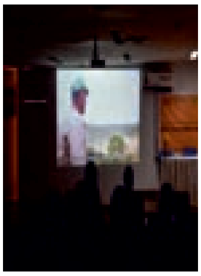

भा.वा.अ.शि.प.–कौशल विकास केंद्र, छिंदवाड़ा ने 5 जून, 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया

विश्व मरुस्थलीकरण एवं सूखा निवारण दिवस

विश्व मरुस्थलीकरण एवं सूखा निवारण दिवस 2024 को "भूमि के लिए एकजुटः हमारी विरासत, हमारा भविष्य" थीम के साथ भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित करके मनाया गया। परिसर के अंदर बंजर भूमि पर अजादिरेक्टा इंडिका (नीम) और पोंगामिया पिन्नाटा (करंज) जैसी सूखा सहनशील प्रजातियों के पौधे रोपे गए। भा.वा.अ.शि.प.– उ.व.अ.स. के निदेशक डॉ. एच.एस. गिनवाल ने भूमि क्षरण की भयावह प्रवृत्ति को रोकने के लिए वर्तमान और भावी पीढ़ियों को शामिल करने की आवश्यकता पर बल दिया, साथ ही राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं को पूरा करने में योगदान दिया।

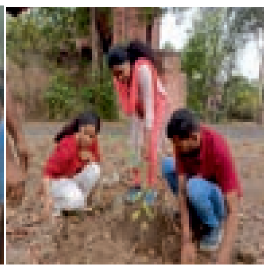

भा.वा.अ.शि.प.–उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान
समाचार पत्र

अप्रैल 2024–जून 2024

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 मनाया। संस्थान के मुख्य तकनीकी अधिकारी डॉ. राजेश मिश्रा के नेतृत्व में सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने एक साथ योगासन और प्राणायाम किए।

'एक पेड़ माँ के नाम अभियान'

भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान में 27 जून, 2024 को 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया गया।

स्टाफ समाचारः

क्र.सं.	अधिकारी	दिनांक	(स्थान) से	(स्थान) तक
1	श्रीमती अनीता, भा.व.से., वन संरक्षक	24.6.2024	ए.एफ.आर.आई.– जोधपुर	भा.वा.अ.शि.प. –उ.व.अ.स., जबलपुर

पुरस्कार

- डॉ. हरिओम सक्सेना, वैज्ञानिक–ई, समीक्षा परिहार, वरिष्ठ परियोजना फेलो और श्री गणेश पवार, वरिष्ठ तकनीशियन को सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र "स्टेरकुलिया यूरेन्स रॉक्सब के गम नमूनों में ग्लूकोरोनिक एसिड की मात्रा का पता लगाने के लिए उच्च प्रदर्शन पतली परत क्रोमैटोग्राफी विधि विकास और सत्यापन" के लिए एन्क्रोम एंटरप्राइजेज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई द्वारा डॉ. पी.डी. सेठी मेमोरियल वार्षिक राष्ट्रीय पुरस्कार – 2022 (योग्यता का प्रमाण पत्र) प्राप्त हुआ। फार्मा, हर्बल और अन्य रासायनिक विश्लेषण में टी.एल.सी./एच.पी.टी.एल.सी. के अनुप्रयोग पर। (अप्रैल 2024 में पुरस्कार प्राप्त हुआ)

- श्रीमती निकिता राय, वरिष्ठ तकनीशियन और सेवाकालीन पीएच.डी. विद्वान, को 18–19 जून, 2024 को झांसी यू.पी. में आयोजित "कृषि–पारिस्थितिक आधार पर कृषि वानिकी पर राष्ट्रीय सम्मेलनः सहभागिता, नवाचार और ऊष्मायन" में "नरसिंहपुर जिले के किसानों के खेत में मौजूद कृषि वानिकी प्रणालियों का आँकलन" पर मौखिक प्रस्तुति देने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति पुरस्कार (प्रथम पुरस्कार) प्राप्त हुआ।श्रीमती निकिता राय, वरिष्ठ तकनीशियन और सेवाकालीन पीएच.डी. विद्वान, को 18–19 जून ,2024 को झांसी यू.पी. में आयोजित "कृषि–पारिस्थितिक आधार पर कृषि वानिकी पर राष्ट्रीय सम्मेलनः सहभागिता, नवाचार और ऊष्मायन" में "नरसिंहपुर जिले के किसानों के खेत में मौजूद कृषि वानिकी प्रणालियों का आँकलन" पर मौखिक प्रस्तुति देने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति पुरस्कार (प्रथम पुरस्कार) प्राप्त हुआ।

नए प्रकाशन

पुस्तक / पुस्तक अध्याय

- डॉ. जंगम दीपिका। (2024) "कार्बन पृथक्करण में मृदा कवक की भूमिका की खोजः जलवायु परिवर्तन शमन की कुंजी", "मृदा उर्वरता में वर्तमान अनुसंधान" नामक पुस्तक में प्रकाशित। प्रकाशकः अकिनीक प्रकाशन, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या 21–45। आईएसबीएनः 978–93–6135–013–9।
- मोहन, सी. और मिश्रा, जे.आर. (2024) "आधुनिक युग में वानिकी अनुसंधानः नवाचार विधियाँ और उपकरण– एडवांस इन कृषि अनुसंधान पद्धति। प्रकाशकः ओ. प्रकाश (सं.), एस.पी. प्रकाशन, खंड 2, पृ. सं. 205–219। आईएसबीएन 978–6039–841–5।

शोध पत्र

- परिहार, एस., सक्सेना, एच.ओ., सिंह, एस. और कुमार, ए. (2024)। मध्य भारत की वन मिट्टी से अलग की गई ट्राइकोडर्मा प्रजातियों की राइजोक्टोनिया सोलानी के विरुद्ध विशेषता और विरोधी क्षमता। ट्रॉपिकल एग्रीकल्चर, 101 (2): 167–177.
- परिहार, एस., सक्सेना, एच.ओ., कुमार, ए. और सिंह, एस. (2024)। मध्य भारत की वन मिट्टी से अलग की गई ट्राइकोडर्मा प्रजाति की मैक्रोफोमिनाफेजोलिना के विरुद्ध संभावित स्ट्रेन की पहचान के लिए इन–विट्रो विरोधी गतिविधि। वेजीटोस, 1–7.
- मोहम्मद, एन. (2024) मध्य प्रदेश के उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन से गम कराया (स्टेरकुलिया यूरेन्स रॉक्सब) में रूपतामक परिवर्तनशीलता का आंकलन। इंडियन फॉरेस्टर, 150(3):226–233। एचटीटीपीएसःएटदरेट / डीओआई–ओआरजी / 10. 36808 / इफ / 2024 / वी150आई3 / 170145

- बानो एन., मोहम्मद, एन., अंसारी एम.आई., अंसारी एस.ए. (2024) लिग्निन बायोसिंथेसिस जीन (सीएडी1) और ट्रांसक्रिप्शन फैक्टर (एमवाईबी1 और एमवाईबी2) में एसएनपी की जीनोटाइपिंग टीक (टेक्टोना ग्रैंडिस एल.एफ.) में लकड़ी के घनत्व के साथ जुड़ाव प्रदर्शित करती है। आणविक जीवविज्ञान रिपोर्ट, 51, 169।
- मोहम्मद, एन., पारधी, वाई., पूसाम एम., मरावी, एस. (2023)। मध्य प्रदेश के उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन में चयनित अध्ययन स्थलों पर गम कराया (स्टेरकुलिया यूरेन्स) के प्राकृतिक पुनर्जनन पर नोट। जर्नल ऑफ नॉन–टिम्बर फॉरेस्ट प्रोडक्ट्स, 30(4):220–222। एचटीटीपीएसःएटदरेट/डीओआई–ओआरजी /10.54207/बीएसएमपीएस 2000–2024–1522।
- जंगम दीपिका। (2023)। मिट्टी के गुणों और सूक्ष्मजीव विविधता पर बायोचार–प्रेरित परिवर्तनों का परिमाणीकरणः एक मेटा–विश्लेषण। इंडियन जे. ट्रॉप. बायोडिव।, 31(2): 136–149
- बनर्जी, एस.के., बनर्जी, एस., जैन, ए. और शुक्ला, पी.के. (2023)। मिट्टी के कार्बनिक पदार्थ – मिट्टी की गुणवत्ता और मिट्टी के स्वास्थ्य के प्रति इसका महत्व। जर्नल ऑफ ट्रॉपिकल फॉरेस्ट्री, जनवरी–दिसंबर 39(1–4): 48–64.
- बनर्जी, एस.के., बनर्जी, एस., जैन, ए. और शुक्ला, पी.के. (2023)। उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में वनों पर निर्भर समुदायों की आजीविका सुरक्षा के लिए गैर–लकड़ी वन उत्पादों के प्रबंधन के विशेष संदर्भ के साथ टिकाऊ वानिकी। जर्नल ऑफ ट्रॉपिकल फॉरेस्ट्री, जनवरी–दिसंबर 39(1–4): 65–81।

लोकप्रिय लेख

- मिश्रा, वाई., मोहम्मद, एन., वर्मा, एन. और गिनवाल, एच.एस. (2024)। मध्य भारत से बीजा साल (पेरोकार्पस मार्सुपियम रॉक्सब.) के लिए आनुवंशिक सुधार और संरक्षण पहल। वुड इज गुड, 4(4): 154–157।
- वर्मा, एन., मोहम्मद, एन. और शिरीन, एफ. (2024)। उच्च लकड़ी उत्पादकता के लिए पीले सागौन (हल्दीना कॉर्डिफोलिया (रॉक्सब.) रिड्सडेल) के लिए सुधार पहल। वुड इज गुड, 4(4): 113–115।
- शिरीन, एफ., कुमार, पी., मोहम्मद, एन. और गिनवाल, एच.एस. (2024)। भा.वा.अ.शि.प.–उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान में सागौन सुधार अनुसंधान का संक्षिप्त अवलोकन। वुड इज गुड, 4(4): 52–57।

सार

- सिंह, एन., राय, एन., शर्मा, एच. और सोंधिया, पी. (2024)। औषधीय पौधों की खेती के लिए जलवायु स्मार्ट तकनीक (हाइड्रोपोनिक्स)। 8–10 जून, 2024 को बुद्ध हॉल, डी. ए. वी. कॉलेज (त्रिभुवन विश्वविद्यालय से संबद्ध) ललितपुर, काठमांडू, नेपाल में आयोजित 7वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ग्लोबल अप्रोच इन एग्रीकल्चरल, बायोलॉजिकल, एनवायरनमेंट एंड लाइफ साइंसेज फॉर सस्टेनेबल फ्यूचर (जी.ए. बी.ई.एल.एस. – 2024) की सार पुस्तक (आई.एस.बी.एन.978–81–970319–5–3) में। पेज नंबर 289।
- राय, एन., बेरी, एन., सिंह, एन. और शर्मा, एच. (2024)। कृषि वानिकी प्रणाली के तहत खेती की जाने वाली मेंथा की गुणवत्ता का आकलन। 8–10 जून, 2024 को बुद्ध हॉल, डी.ए.वी. कॉलेज (त्रिभुवन विश्वविद्यालय से संबद्ध) ललितपुर, काठमांडू, नेपाल में आयोजित 7वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ग्लोबल अप्रोच इन एग्रीकल्चरल, बायोलॉजिकल, एनवायरनमेंट एंड लाइफ साइंसेज फॉर सस्टेनेबल फ्यूचर (जी.ए.बी.ई.एल.एस. – 2024) के सार पुस्तक (आई.एस.बी.एन. 978–81–970319–5–3) में। पृष्ठ संख्या 297। राय, एन., बेरी, एन., सिंह, एन. और शर्मा, ए. (2024)। नरसिंहपुर जिले के किसानों के खेतों में मौजूद कृषि वानिकी प्रणालियों का आकलन। 18–19 जून, 2024 को झाशी यू.पी. में आयोजित कृषि–पारिस्थितिक आधार पर राष्ट्रीय सम्मेलन में कृषि वानिकीः सहभागिता, नवाचार और ऊष्मायन। पृष्ठ संख्या 125।

पत्रक

- निधीश टी.डी. (2024).मधुमक्खी पालनः मानव जाति के लिए अनेक लाभ।

मीडिया कवरेज

पीपुल्स समाचार

टीएफआरआई के वैज्ञानिकों की तकनीक से पार्क में रोपे जाएंगे पौधे

दैनिक भास्कर महानगर

जंगली फल मूल्य संवर्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से वन समुदायों का सशक्तिकरण

The Hitavada

CFRE-TFRI organise training on seed and nursery technology for forests

जबलपुर नव स्वदेश

बीज और नर्सरी प्रौद्योगिकी पर प्रशिक्षण में शामिल हुए फ्रंटलाइन कर्मचारी

नईदुनिया पेज 3

बीजों के महत्व पर विशेषज्ञों ने डाला प्रकाश

पत्रिका सिटी बुक 04

नर्सरी प्रौद्योगिकी का प्रशिक्षण

उन्नत बीज की दी जानकारी

पीपुल्स समाचार 24

जंगली खाद्य फलों के मूल्य संवर्धन के लिए आदिवासियों को दी ट्रेनिंग

टीएफआरआई द्वारा पिपरिया गांव में एक दिवसीय आयोजन

पीपुल्स समाचार अपना जबलपुर

वन अधिकारियों ने जाना कैसे करें मृदा पोषक तत्व का प्रबंधन

टीएफआरआई द्वारा एक दिनी ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन

जबलपुर नव स्वदेश

70 वन अधिकारियों को मिली मृदा पोषण तत्व की जानकारी

नईदुनिया शहर अपना शहर

मृदा पोषक तत्व प्रबंधन पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित

छिंदवाड़ा देशबन्धु

70 वनकर्मियों को दिया मृदा पोषक तत्व प्रशिक्षण

भूमि क्षरण की समस्या पर हुई चर्चा

राज एक्सप्रेस महानगर

वन अधिकारियों को मिला मृदा पोषक तत्व प्रबंधन का प्रशिक्षण

जबलपुर (आरएनएन)। उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (टीएफआरआई) द्वारा वन अधिकारियों के लिए मृदा पोषक तत्व प्रबंधन पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें मुख्य अतिथि महानिदेशक भावअशिप कंचन देवी ने मध्यप्रदेश की मृदा पोषक तत्वों के सतत आकलन में संस्थान के प्रयासों की सराहना की और भूमि क्षरण की समस्या और ग्लोबल वार्मिंग पर उसके प्रभाव के समाधान के लिए परियोजना के राष्ट्रीय महत्व पर बात की। कार्यक्रम में टीएफआरआई निदेशक डॉ. एचएस गिनवाल ने डॉ. अविनाश जैन, प्रशिक्षण समन्वयक वैज्ञानिक और प्रमुख, वन पारिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग के नेतृत्व में संस्थान द्वारा तैयार किए गए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड के प्रयोग से मध्य प्रदेश के वनों की उत्पादकता बढ़ाने की जानकारी प्रदान की। इस कार्यक्रम में बैतूल, सिवनी, होशंगाबाद और छिंदवाड़ा सर्कल के लगभग 70 वन अधिकारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

भा.वा.अ.शि.प. —उ.व.अ.स., जबलपुर में बुनियादी ढांचा और उपलब्ध सुविधाएं :

- कीटों की 750 प्रजातियाँ संरक्षित हैं।
- राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण (एनबीए) द्वारा राष्ट्रीय कीट भंडार के रूप में मान्यता प्राप्त है।

राष्ट्रीय कीट भंडार

- 4000 कवक नमूनों को व्यवस्थित और प्रलेखित किया गया और कवक की 451 प्रजातियों की पहचान कीगई।
- वन कवक पहचान सेवा उपलब्ध है।

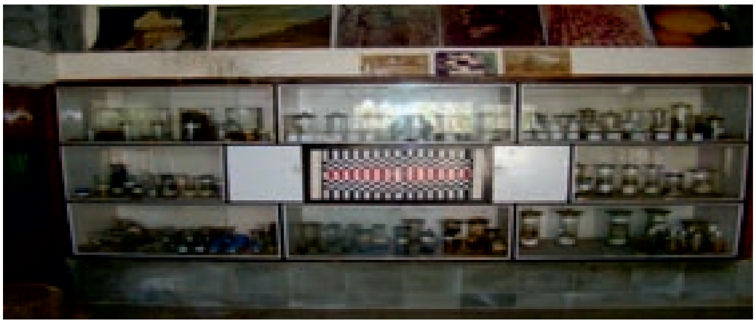

माइकोलॉजी हर्बेरियम

- हर्बेरियम में 800 पौधों के नमूने संरक्षित हैं।
- वन पारिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग नमूने प्रस्तुत करने पर पौधों की पहचान की सेवाएँ प्रदान करता है।

हर्बेरियम

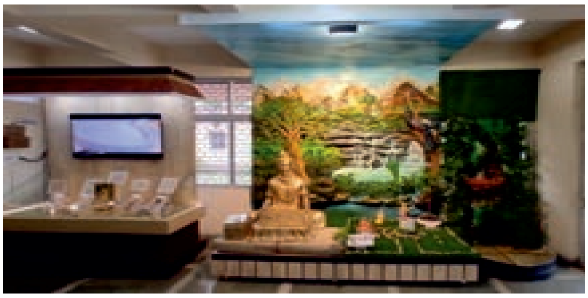

गैर इमारती लकड़ी वन उत्पाद (एनटीएफपी) प्रदर्शन केंद्र व्याख्या केंद्र – संग्रहालय

व्याख्या केंद्र – संग्रहालय

- वन संरक्षण प्रभाग में आगंतुकों के लिए प्रदर्शन हेतु वन रोग विज्ञान और सूक्ष्म जीव विज्ञान से संबंधित विभिन्न प्रौद्योगिकियों पर 09 डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड और विभिन्न प्रकार के वन मशरूम पर 12 डिस्प्ले पोस्टर तैयार किए गए।

तकनीकी सेवाएँ :

संस्थान द्वारा छात्रों/हितधारकों के लिए इंटर्नशिप कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं–

इंटर्नशिप शुल्क

क्रम संख्या	प्रशिक्षण अवधि	प्रौद्योगिकी / आणविक जीव विज्ञान		अन्य विषय	
		बी.एससी./स्नातक	एम.एससी. स्नातकोत्तर	बी.एससी./स्नातक	एम.एस.सी. स्नातकोत्तर
1.	एक सप्ताह	रु 1000	रु 2000	रु 1000	रु 2000
2.	पंद्रह दिन	रु 2000	रु 4000	रु 1000	रु 3000
3.	एक महीना	रु 3000	रु 8000	रु 3000	रु 5000
4.	दो महीने	रु 5000	रु 11000	रु 5000	रु 7000
5.	तीन महीने	रु 28000	रु 16000	रु 7000	रु 11000
6.	तीन महीने से छह महीने तक	रु 12000	रु 22000	रु 9000	रु 16000

भा.वा.अ.शि.प. –उ.व.अ.स.,जबलपुर में उपलब्ध परीक्षण सुविधाएं –

क्र. सं.	पैरामीटर	कीमत (रूपए)में
1	पी.एच.	100/– प्रति नमूना
2	ई.सी.	100/– प्रति नमूना
3	कार्बनिक कार्बन (ओसी)/कार्बनिक पदार्थ	100/– प्रति नमूना
4	प्रमुख पोषक तत्व (एन, पी, के, सीए, एमजी, एनए)	300/– प्रत्येक और 1500/– पैकेज
5	सूक्ष्म पोषक तत्व (एमजी,एनआई,जेडएन,एफई,सीओ, सीआर, सीयू, एमएन, बी)	300/– प्रत्येक और 2000/– पैकेज
6	बनावट विश्लेषण	500/–प्रति नमूना
7	कुल घनत्व	150/– प्रति नमूना
8	कुल मिट्टी विश्लेषण (1 से 7)	4000/– प्रति नमूना
9	शुष्क पदार्थ/नमी प्रतिशत	100/–प्रति नमूना
10	संयंत्र परीक्षण – एन, पी, के, सीए, एमजी, एनए	250/– तत्व और 1300/– सभी के लिए
11	पौधे की पहचान शुल्क	250/– नमूना
12	जैव–नियंत्रण एजेंट–अंडा परजीवी कार्ड (25000 अंडे/कार्ड)	300/– कार्ड
13	कीट डिफोलिएटर/व्हाइट ग्रब के विरुद्ध कीटनाशक (जैव कीटनाशक/कीटनाशक) का प्रयोगशाला परीक्षण	20,000/– प्रति डिफोलिएटर 40,000/– प्रति सफेद ग्रब
14	दीमकों और कीड़ों को नष्ट करने वाले कीटों के विरुद्ध कीटनाशकों का क्षेत्रीय परीक्षण	1,00,000/–
15	क्षय कवक/फफूंद के लिए पहचान सेवाएँ	1000/–प्रजाति
16	फफूंद नमूने की पहचान एवं उसका हर्बेरियम से मिलान	250/–प्रति नमूना
17	कवक की माइक्रो फोटोग्राफी	100/– प्रति नमूना
18	बीज अंकुरण एवं व्यवहार्यता परीक्षण	500/– प्रति नमूना
19	बीज शुद्धता परीक्षण	400/– प्रति नमूना
20	बीज में नमी की मात्रा	200/– प्रति नमूना
21	फिनोल का निर्धारण (यदि मानक उपलब्ध हो)	600/– प्रति नमूना
22	टैनिन का निर्धारण (यदि मानक उपलब्ध हो)	600/– प्रति नमूना
23	कार्बोहाइड्रेट का निर्धारण (यदि मानक उपलब्ध हो)	600/– प्रति नमूना
24	स्टार्च का निर्धारण (यदि मानक उपलब्ध हो)	600/– प्रति नमूना
25	क्लोरोजेनिक एसिड का निर्धारण (यदि मानक उपलब्ध हों)	600/– प्रति नमूना
26	प्रोटीन का निर्धारण (यदि मानक उपलब्ध हो)	600/– प्रति नमूना
27	एचपीटीएलसी की मदद से औषधीय पौधों की कीमो प्रोफाइलिंग पहले नमूने के लिए	2000/– और उसी प्रजाति के प्रति बाद के नमूने के लिए 500/–
28	पत्ती क्षेत्र माप	200/– प्रति नमूना
29	पौधों के अर्क में एकल मार्कर घटक का अनुमान अकादमिक/अनुसंधान एवं विकास के लिए प्रति नमूना	अकादमिक/अनुसन्धान के लिए 5500/–,
30	ऐश सामग्री	अकादमिक/अनुसन्धान के लिए 610/–प्रति नमूना, उद्योग के लिए 1100/– प्रति नमूना
31	सूक्ष्मदर्शी द्वारा विश्लेषण	500/– प्रति नमूना
32	आनुवंशिक निष्ठा परीक्षण	10,000/– प्रति नमूना (न्यूनतम 10 नमूने)

सामाजिक सहायतार्थ उपलब्ध सेवाएँ –

उन्नत किस्में – प्रति पौधा रु. 100/–

क्रम संख्या	प्रजातियाँ	उपलब्ध पौधों की संख्या
1.	राउवोल्फिया सर्पेंटिना टीएफआरआई आरएस–1 (सर्पगंधा) 200	200
2.	राउवोल्फिया सर्पेंटिना टीएफआरआई आरएस–2 (सर्पगंधा) 150	150

बांस की प्रजाति– रु. 30/–पौधा

क्रम संख्या	प्रजातियाँ	उपलब्ध पौधों की संख्या
1.	बंबुसा बांस (कटांग बांस)	1350
2.	बम्बुसा वल्गारिस (वर. हरा)	110
3.	बम्बुसा नूटैंस	75
4.	डेंड्रोकैलेमस स्ट्रिक्टस (लाठी बांस)	940
5.	डेंड्रोकैलेमस लॉन्गिस्पैथस	100

वृक्ष प्रजातियाँ और औषधीय पौधे– रु. 25/– पौधा

क्रम संख्या	प्रजातियाँ	उपलब्ध पौधों की संख्या
1.	टेक्टोना ग्रैंडिस (सागौन)	200
2.	डालबर्गिया लैटिफोलिया (काला शीशम, रोजवुड)	200
3.	सेलास्ट्रस पैनिकुलैटस (मालकागिनी, ज्योतिष्मती)	100
4.	प्लम्बैगो जेलेनिका (चित्राक)	100
5.	ओरोक्सिलम इंडिकम (शिवनाग)	50
6.	टैमेरिंडस इंडिका (इमली)	150

बिक्री के लिए उपलब्ध बीज और पौधे–

क्रम संख्या	प्रजाति का नाम		दरें	
	सामान्य नाम	वैज्ञानिक नाम	बीज(रूपए/किग्रा)	पौधे (रू/पौधा)
1.	सागौन	टेक्टोना ग्रैंडिस	5000/–	30/– (उठाया हुआ बीज) 60/– (ऊतक संवर्धन)
2.	बीजसाल	टेरोकार्पस मार्सुपियम	5000/–	31/–
3.	शीशम	डालबर्गिया लैटिफोलिया	7000/–	50/–
4.	सिस्सो	डालबर्गिया सिसू	3000/–	31/–
5.	मैदा छाल	लित्सा ग्लुतिनोसा	10000/–	100/–
6.	चिरोंजी	बुकाननिया लान्जन	8000/–	50/–
7.	कुल्लू	स्टरकुलिया यूरेन्स	–––	50/–
8.	महुआ	मधुका लोंगिफोलिया	5000/–	50/–
9.	नीम	आजादिरेक्टा इंडिका	5000/–	50/–
10.	इमली	टैमेरिन्डस इंडिका	3000/–	30/–
11.	बेल	एगल मार्मेलोस	–––	30/–
12.	करंज	पोंगामिया पिनाटा	3000/–	30/–
13.	खेमर	गमेलिना आर्बोरिया	1000/–	50/–
14.	हल्दू	हल्दीना कोर्डिफोलिया	–––	50/–
15.	बांस	विभिन्न जीव	–––	50/–
16.	सर्पगंधा	टीएफआरआई–आरएस– I टीएफआरआई–आरएस– II	–––	50/–
17.	कैम/मुंडी	मित्राग्यना परविफोलिया	3000/–	50/–
18.	कुम्बी	केरिया आर्बोरे	3000/–	50/–
19.	जामुन	साईजियम क्यूमिनी	3000/–	50/–
20.	खैर	एकेसिया कत्था	5000/–	50/–
21.	बबूल	एकेसिया निलोटिका	3000/–	50/–

LiFE Lifestyle for Environment

भा.वा.अ.शि.प.–उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान
समाचार पत्र

अप्रैल 2024–जून 2024

वन संवर्धन, प्रबंधन एवं कृषि वानिकी प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प. –उ.व.अ.स., जबलपुर में बिक्री के लिए उपलब्ध पौधे:

क्रम संख्या	प्रजाति	उपलब्ध पौधों की संख्या
1.	टिनोस्पोरा कोर्डिफोलिया	100
2.	कायम्बोपोगॉन साइट्रस	100
3.	ऑरोक्सजायलम इंडिकम इन्दिउम	50
4.	मिमुसोप्स एलेंगी	260
5.	एसपरगस रेसिमोसस	100
6.	अर्तेमिसिअ अन्नुअ	30
7.	फायलेंथस इम्बिलिका	25
8.	टर्मिनेलिया अर्जुना	30
9.	मोरिंगा ओलेइफेरा एल	1850
10.	बैम्बू	600
11.	डेलोनिक्स रेजिया	3000
12.	केशिया फिस्टुला	1000
13.	पोन्गामिया पिन्नेट	550
14.	टैमेरिंडस इंडिका	820
15.	अल्बिजिया लेब्बेक्क	5000
16.	एग्ले मार्मेलोस	540
17.	स्य्जिगियम कमइनी	540
18.	टर्मिनालिया बेल्लेरिका	720
19.	अन्य प्रजाति	उपलब्धता के अनुसार

- औषधीय/वृक्ष प्रजातियाँ प्रति पौधे– रु. 30/–
- कीमतें और संख्या उपलब्धता और मौसम के अनुसार भिन्न हो सकती हैं।

भा.वा.अ.शि.प.–उ.व.अ.स. ट्राईको–कार्ड:

- उ.व.अ.स. ट्राईको–कार्ड को पर्सिटॉइड, ट्राइकोग्रामा राओई का उपयोग करके विकसित किया गया है।
- यह टीक डेफोलिएटर और स्केलटोनाइजर के प्रबंधन के लिए एक पर्यावरण अनुकूलन जैव–नियंत्रण विधि है।
- एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए 4 कार्ड की आवश्यकता होती है जो कि 500 रूपये प्रति कार्ड की दर से उपलब्ध है।

विश्राम गृह सुविधाएं और शुल्क:

क्रम संख्या	व्यक्ति की श्रेणी	सरकारी ड्यूटी पर रहते हुए प्रति दिन किराया। शुल्क (रु.)		सरकारी ड्यूटी पर न रहते हुए प्रतिदिन किराया। शुल्क (रु.)	
		कमरा –20	सुईट–4	कमरा	सुईट
1.	अ) आईसीएफआरई और संस्थानों के अधिकारी ब)आईसीएफआरई और उसके संस्थानों और एफआरआई डीम्ड विश्वविद्यालयों में सलाहकार और अनुसंधान फेलो स) एम.ओ.ई.एफ.सी.सी.,नई दिल्ली के अधिकारी और विशेषज्ञ द) एसएफडी के अधिकारी ई) आई.सी.एफ.आर.ई. के पूर्व कर्मचारी और पूर्व–प्रतिनियुक्तिवादी	150	200	200	300
2.	वर्तमान/पूर्व कर्मचारियों के परिवार के सदस्य अ) आईसीएफआरई कर्मचारी ब) आईसीएफआरई प्रतिनियुक्तिवादी			200	300
3.	अ)एफ.आर.आई. डीम्ड विश्वविद्यालय के तहत स्वायत्त निकायों, विश्वविद्यालयों के अधिकारी ब) एस.एफ.डी. के अलावा केंद्र/राज्य सरकार के अधिकारी	200	300	400	500
4.	अन्य गैर सरकारी			600	750
5.	स्थायी मंच के साथ सामुदायिक उद्यान/हॉल (चेंजिंग रूम/बैठक कक्ष की सुविधाएं)	50000/–प्रतिदिन			

उपरोक्त किराए के अतिरिक्त रखरखाव शुल्क निम्नानुसार लागू होंगे:

आवास प्रकार	हीटर शुल्क , .एसी. रखरखाव शुल्क
कमरा	200 /– प्रतिदिन
सुइट	250 /– प्रतिदिन

विश्राम गृह का दृश्य

संरक्षक
डॉ. एच. एस. गिनवाल
निदेशक
भा.वा.अ.शि.प.– उ.व.अ.स., जबलपुर

मुख्य संपादक
श्रीमती नीलू सिंह
वैज्ञानिक– जी, समूह समन्वयक (अनुसंधान)
भा.वा.अ.शि.प.– उ.व.अ.स., जबलपुर
संपादक
डॉ जंगम दीपिका
वैज्ञानिक–सी, पारिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प.– उ.व.अ.स., जबलपुर
डॉ कौशल त्रिपाठी
वैज्ञानिक–सी, अनुवांशिकी एवं वृक्ष सुधार प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प.– उ.व.अ.स., जबलपुर
श्री नीरज प्रजापति
वैज्ञानिक–सी, वन संवर्धन, प्रबंधन एवं कृषि वानिकी प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प.– उ.व.अ.स., जबलपुर
डॉ. दर्शन के.
वैज्ञानिक–सी, वन सुरक्षा प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प.– उ.व.अ.स., जबलपुर
श्री अजित कुमार मौर्या
वैज्ञानिक–बी, वन संवर्धन, प्रबंधन एवं कृषि वानिकी प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प.– उ.व.अ.स., जबलपुर

तकनीकी समर्थन
श्री एच. एल. असाटी
सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी,
भा.वा.अ.शि.प.– उ.व.अ.स., जबलपुर

श्रीमती निकिता राय
वरिष्ठ तकनीशियन,
भा वा अ शि प – उ व अ स ,.जबलपुर

अधिक जानकारी के लिए संपर्क या स्कैन करें

समूह समन्वयक अनुसंधान
भा.वा.अ.शि.प.– उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान
(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)
पी.ओ.: आर.एफ.आर.सी., मंडला रोड, जबलपुर– 482021, मध्यप्रदेश
फोन नंबरः– +91–761–2840010(ओ) फैक्सः– +91–761–2840484
समूह समन्वयक (अनुसंधान) फोन : 0761–2840003
वेबसाइटः–एचटीटीपी;/ /टीएफआरआई.आईसीएफआरई.जीओवी.इन ; ईमेलः– डीआईआर– टीएफआरआई एटदरेट आईसीएफआरई.ओआरजी, जीआरओयूपीसीओ–टीएफआरआई एटदरेट आईसीएफआरई.ओआरजी

भा.वा.अ.शि.प.–उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान समाचार पत्र

अप्रैल 2024–जून 2024

संस्थान के बारे में

- उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (मध्यप्रदेश) मध्य भारत में मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र राज्यों में वन और वानिकी क्षेत्रों के सतत् विकास के लिए मजबूत अनुसंधान सहायता प्रदान करने के लिए अप्रैल 1988 में अस्तित्व में आया।
- यह भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून (उत्तराखंड) के तहत नौ क्षेत्रीय संस्थानों में से एक है।
- कौशल विकास के लिए वन अनुसंधान केंद्र, छिंदवाड़ा, 30 मार्च 1995 को अस्तित्व में आया। इसे 3 जनवरी 1996 को उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर का एक उपग्रह केंद्र घोषित किया गया।

मुख्य अनुसंधान क्षेत्र

- विंध्य, सतपुड़ा और मैकल पहाड़ियों और पश्चिमी घाटों की पर्यावरण– पुनर्स्थापना, खनन क्षेत्रों का पुनर्वास।
- कृषि वानिकी मॉडल का विकास और प्रदर्शन
- वन संरक्षण
- जैव उर्वरक और जैव कीटनाशक
- गैर–लकड़ी वन उत्पाद
- जैव विविधता मूल्यांकन, संरक्षण और विकास
- सतत् वन प्रबंधन